Ameere Ahle Sunnat Ki Baaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 245
Weekly Booklet : 245

माहनामा "फ़ैज़ाने मदीना" के बेक टाइटल पर आने वाले मज़ामीन

अमीरे अहले सुन्नत की बातें

सफ़हात 18

- बड़े बोल मत बोलिये 02
- मैं अख़्बार पढ़ने से क्यूं बचता हूं ? 04
- किताब लिखने की एहतियातें 09
- दा 'वते इस्लामी का क्या होगा ! 12

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत की बातें**
सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत की बातें**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात.

MO. 98987 32611 • **Email :** hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की हिक्मत भरी बातों पर मुश्तमिल मज़ामीन से तय्यार किया गया है।

अमीरे अहले सुन्नत की बातें

दुआए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़्हात का रिसाला : "**अमीरे अहले सुन्नत की बातें**" पढ़ या सुन ले उसे अपने नेक बन्दों के नक़्शे क़दम पर चला। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक सूफ़ी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने मिश्ताह़ नामी एक शख़्स को मरने के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "**अल्लाह** पाक ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" बोला : "**अल्लाह** करीम ने मुझे बख़्श दिया।" मैं ने वज्ह पूछी तो उस ने बताया : "एक बार मैं ने ह़दीसे पाक के एक बहुत बड़े आ़लिम से अ़र्ज़ की, कि मुझे कोई ह़दीसे पाक सनद के साथ लिखवा दीजिये। चुनान्चे ह़दीस लिखवाते हुए जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक नाम आया तो मुह़द्दिस साह़िब ने दुरूदे पाक पढ़ा, उन्हें देख कर मैं ने भी बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक पढ़ा, जब वहां बैठे हुए लोगों ने सुना तो उन्हों ने भी दुरूद पढ़ा जिस की बरकत से **अल्लाह** पाक ने हम सब को बख़्श दिया।" (القربۃ لابن بشکوال، حدیث:63، ص66)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बड़े बोल मत बोलिये

अज़् : अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने बेटे अ़ब्दुल मलिक को नसीह़त भरा एक ख़त़ रवाना फ़रमाया जिस में एक नसीह़त येह भी थी : "अपनी गुफ़्तगू के ज़रीए फ़ख़्र करने या'नी बड़े बोल बोलने और ख़ुद पसन्दी से बचते रहो ।" (حلیۃ الاولیاء، 5/310)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हम से जो भी अच्छा काम होता है वोह सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की रह़मत और उस के फ़ज़्ल ही से होता है, उस में हमारा अपना कोई कमाल नहीं होता, मगर बा'ज़ लोग मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर फ़ख़्रिय्या बातें करते और अपने बारे में बड़े बोल बोलते नहीं थकते । मसलन "हम ने जो दीन का काम किया है ऐसा कभी किसी ने नहीं किया, मैं ने जो किताब लिखी है ऐसी किताब कभी किसी ने नहीं लिखी या ऐसी किताब कोई लिख कर तो दिखाए, मेरे बयान के दौरान तो एक आदमी भी उठ कर नहीं जाता, उस के काम की हमारे काम के आगे कोई ह़ैसिय्यत ही नहीं ! मेरे इ़ल्म के आगे फ़ुलां के इ़ल्म की ह़ैसिय्यत ही क्या है ? वोह तो अभी बच्चा है, हम तो इस मैदान के पुराने खिलाड़ी हैं वग़ैरा" इस त़रह़ के कई बड़े बोल हमारे हां आ़म त़ौर पर लोग बोल देते हैं जो कि उन्हें नहीं बोलने चाहिएं, याद रहे कि तकब्बुर के मुख़्तलिफ़ अस्बाब और अन्दाज़ वग़ैरा ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ाज़ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपनी किताब "एह़याउल उ़लूम" में बयान फ़रमाए हैं, चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ज़बान के ज़रीए

तकब्बुर के तह़्त लिखते हैं : ''मसलन एक इ़बादत गुज़ार फ़ख़्र के त़ौर पर और दीगर इ़बादत गुज़ार लोगों के बारे में ज़बान दराज़ी करते और उन की ऐ़बजूई करते हुए कहता है कि फ़ुलां इ़बादत गुज़ार है कौन ? उस का अ़मल क्या है ? उसे बुज़ुर्गी कहां से मिली ? मैं ने इतने अ़र्से से नफ़्ल रोज़ा नहीं छोड़ा, न इ़बादत के सबब रातों को सोया, रोज़ाना एक मरतबा क़ुरआने करीम ख़त्म करता हूं जब कि फ़ुलां शख़्स सह़री तक सोया रहता है और तिलावते क़ुरआन भी ज़ियादा नहीं करता। फ़ुलां आदमी ने मुझे तक्लीफ़ देना चाही तो उस का बेटा मर गया या माल लुट गया या वोह बीमार हो गया वग़ैरा, इस त़रह़ दबे लफ़्ज़ों में अपनी करामत का भी दा'वा कर रहा होता है, यूं ही एक आ़लिम फ़ख़्र करते हुए कहता है : मैं मुख़्तलिफ़ फ़ुनून का जामेअ़ हूं, ह़क़ाइक़ से आगाह हूं, मैं ने मशाइख़े किराम में से फ़ुलां फ़ुलां को देखा है, लिहाज़ा तू कौन है ? तेरी फ़ज़ीलत और तेरी औक़ात ही क्या है ? तू ने किस से मुलाक़ात की है और किस से ह़दीस की समाअ़त की है ? येह तमाम बातें वोह इस लिये करता है कि सामने वाले को ह़क़ीर और ख़ुद को अ़ज़ीम क़रार दे।''

(احیاء العلوم، 3/430 ملخصا)

बा'ज़ लोगों की आ़दत होती है कि वोह इस त़रह़ कहते हैं कि ''अपना मुरीद है, मेरा शागिर्द है।'' मुझे (या'नी सगे मदीना को) येह भी अच्छा नहीं लगता। हां ज़रूरतन बोलना अलग बात है या फिर अगर कोई बहुत ही पहुंची हुई हस्ती हो जैसा कि मेरे मुर्शिदे करीम ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कि उन्हों ने फ़रमाया : ''مُرِيْدِیْ لَاتَخَفْ اَللّٰهُ رَبِّیْ'' या'नी मेरे मुरीद मत ख़ौफ़ कर, **अल्लाह** पाक मेरा

रब है।" (मदनी पन्जसूरह, क़सीदए ग़ौसिय्या, स. 264) तो येह इन को जचता है, इन का इस त़रह़ की बात करना कोई मा'यूब नहीं है। बा'ज़ लोग किसी को दुआ़ देते हुए कहते हैं कि "जा बच्चा ! जा बेटा ! जा भाई ! मेरी दुआ़ तेरे साथ है" मुझे तो येह जुम्ले बोलना भी कुछ मुनासिब नहीं लगते। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस त़रह़ बोलने की मेरी आ़दत नहीं है। अगर किसी को दुआ़ देनी भी है तो यूं कहना चाहिये कि **अल्लाह** करीम आसानी करे, **अल्लाह** ख़ैर करे, اِنْ شَآءَ اللہ सब बेहतर हो जाएगा। अलबत्ता येह कहना कि "मेरी मां की दुआ़ मेरे साथ है" येह अलग चीज़ है, इस में ह़रज नहीं। **अल्लाह** करीम हमें दीगर गुनाहों के साथ साथ ज़बान की आफ़तों से भी मह़फ़ूज़ फ़रमाए।[1] اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّين صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, फ़रवरी 2022 ई़)

मैं अख़बार पढ़ने से क्यूं बचता हूं ?

एक मरतबा किसी ने मुझे एक पेम्फ़लेट दिया जिस में किसी की त़रफ़ कुछ उ़यूब मन्सूब किये गए थे। मैं ने वोह पेम्फ़लेट पढ़े बिग़ैर जेब में रख लिया और इस त़रह़ ग़ौर करने लगा कि अगर मैं इस पेम्फ़लेट को पढ़ूंगा तो कहीं गुनाह तो नहीं मिलेगा ? फिर मैं ने पेम्फ़लेट देने वाले की तवज्जोह इस पहलू की त़रफ़ करने के लिये उन से पूछा कि इस को पढ़ने में कितनी नेकियां मिलेंगी ? उस ने जवाब दिया : नेकी तो कोई नहीं मिलेगी। मैं ने कहा कि जिस के बारे में येह पेम्फ़लेट है अगर उसे येह मा'लूम हो जाए कि आप ने मुझे येह पेम्फ़लेट दिया और मैं ने इसे पढ़ा तो वोह ख़ुश होगा या नाराज़ ? उस ने जवाब दिया : नाराज़। मैं ने कहा

1... येह मज़्मून 4 रजबुल मुरज्जब 1441 हि. मुत़ाबिक़ 28 फ़रवरी 2020 ई़ को इ़शा की नमाज़ के बा'द होने वाले मदनी मुज़ाकरे की मदद से तय्यार कर के अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से नोक पलक संवार कर पेश किया गया है।

कि जिस पेम्फ़लेट के पढ़ने में नुक़्सान ही नुक़्सान हो तो उसे पढ़ना ही नहीं चाहिये, लिहाज़ा मैं ने वोह पेम्फ़लेट ज़ाएअ़ कर दिया। ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जिस त़रह़ किसी मुसल्मान में पाई जाने वाली बुराइयों का पीठ पीछे तज़्किरा करना ग़ीबत जब कि उस के अन्दर उन बुराइयों के न पाए जाने की सूरत में बयान करना बोहतान कहलाता है ऐसे ही लिख कर छापने का भी मुआ़मला है। बिला इजाज़ते शर्ई मुसल्मान की किरदार कुशी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, चाहे वोह ज़बान से बोल कर हो, अख़्बार के ज़रीए हो या पेम्फ़लेट की सूरत में। जो अह़काम ज़बान से कहने के हैं वोही क़लम से लिखने के भी हैं। जैसा कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : اَلْقَلَمُ اَحَدُ اللِّسَانَيْن (क़लम भी एक ज़बान है।) जो ज़बान से कहे पर अह़काम हैं वोही क़लम पर (भी हैं)। (फ़तावा रज़विय्या, 14/607) लिहाज़ा ऐसे अख़्बारात, इश्तिहारात और पेम्फ़लेट्स जो मुसल्मानों के उ़यूबो नक़ाइस पर मुश्तमिल हों उन के पढ़ने और सुनने से अपने आप को बचाइये। मेरी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ फ़ी ज़माना तक़रीबन अख़्बारात बे पर्दा औ़रतों की तसावीर और गुनाहों भरी तह़रीरात से पुर होते हैं। आज कल शायद ही कोई अख़्बार ऐसा हो जिस में मुसल्मान की इ़ज़्ज़त का तह़फ़्फ़ुज़ हो, कभी कोई मुसल्मान वज़ीरे आ'ज़म हदफ़े तन्क़ीद होता है तो कभी सद्र, कभी वज़ीरे आ'ला की शामत आती है तो कभी गवर्नर की, अल ग़रज़ सियासत दान हो या आ़म मुसल्मान अख़्बारात में उ़मूमन सब की इ़ज़्ज़त की धज्जियां उड़ाई जाती हैं, बिल ख़ुसूस इलेक्शन के दिनों में कुछ लोग तोहमतों और ग़ीबतों से भरपूर बयानात दाग़ते, अख़्बारात में

छापते और ख़ूब कीचड़ उछालते हैं। ऐसी सूरते हाल में अपने आप को गुनाहों से बचाना इन्तिहाई दुश्वार होता है। इन्ही वुजूहात की बिना पर मैं अख़्बारात, ग़ैर शर्ई इश्तिहारात और गुनाहों भरे पेम्फ़लेट्स पढ़ने से बचता हूं। हां ! अगर किसी की बुराई से दूसरों को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा हो तो शर्ई इजाज़त और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ लोगों को उस के नुक़्सान से बचाने के लिये गुफ़्तगू या तहरीर वग़ैरा में ब क़दरे ज़रूरत सिर्फ़ उसी बुराई का तज़्किरा किया जा सकता है। ऐ काश ! हर मुसल्मान अपने ऐबों पर नज़र रखे, दूसरों के उयूब बयान करने या लिख कर छापने के बजाए ढांपने की कोशिश करते हुए उन की जानो माल और इज़्ज़त का मुहाफ़िज़ बन जाए।

अल्लाह पाक हमें दूसरों के ऐबों पर नज़र रखने के बजाए अपने ऐबों को तलाश कर कर के उन्हें दूर करते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।[1]

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, रबीउल आख़िर, 1442 हि.)

अत्तारियों के लिये बिशारत

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْم، اَمَّا بَعْد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ जब से मैं ने होश संभाला है, अपने दिल में प्यारे महबूबे करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत के चश्मे फूटते महसूस किये हैं। इश्के रसूल का जाम मुझे मेरे ग़ौसे पाक ने पिलाया, मेरे आ'ला हज़रत ने पिलाया رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمَا. اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! मुझ पर येह ख़ुसूसी फ़ैज़ान है कि मुझे

1... येह मज़्मून रिसाला : फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (क़िस्त : 33) "बुराई का बदला अच्छाई के साथ दीजिये" की मदद से तय्यार कर के अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से मज़ीद मश्वरे ले कर पेश किया जा रहा है।

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से, तमाम सह़ाबए किराम से, तमाम अहले बैते अत़्हार ख़ुसूसन शुहदाए करबला से बड़ा प्यार है رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ اَجْمَعِیْن, औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से बड़ी मह़ब्बत है ख़ुसूसन ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मैं बड़ी अ़क़ीदत रखता हूं, **अल्लाह** पाक की रह़मत से सादाते किराम का एह़तिराम मैं अपनी नस नस में पाता हूं और मैं उम्मीद करता हूं कि اِنْ شَآءَالله जो मेरे ज़रीए़ ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुरीद होगा, अ़त्तारी बनेगा, اِنْ شَآءَالله वोह कभी भी, कभी भी, कभी भी मीठे मीठे आक़ा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, तमाम अहले बैते अत़्हार ब शुमूल मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा और ह़सनैने करीमैन और तमाम सह़ाबए किराम ब शुमूल ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ اَجْمَعِیْن, इन पाक हस्तियों से ग़द्दारी नहीं कर सकता बल्कि जो किसी दूसरे जामेए़ शराइत़ शैख़ का मुरीद होगा और मेरे सिल्सिले में त़ालिब होगा, اِنْ شَآءَالله वोह भी इन पाक हस्तियों का कभी भी बाग़ी नहीं बनेगा।

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! मेरे कहे की लाज रख ले, मेरे मौला ! 25 रमज़ानुल मुबारक 1439 हिजरी को मैं ने ह़ुस्ने ज़न की बिना पर येह चन्द कलिमात ह़ाजी इमरान अ़त्तारी के मुत़ालबे पर अ़र्ज़ किये हैं, ऐ **अल्लाह** ! मेरी लाज रख ले कि ऐसा ही हो, हम उ़म्र भर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की, औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की मह़ब्बतों का दम भरते रहें, सरकारे आ'ला ह़ज़रत

मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के गुन गाते रहें इसी पर हमारा ख़ातिमा ईमान के साथ हो ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1439 हि.)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه किताबें कैसे लिखते हैं ?

एक मदनी मुज़ाकरे में सिडनी ऑस्ट्रेलिया से एक बच्चे "अ़ब्दुल्लाह अ़त्तारी" ने सोशल मीडिया के ज़रीए शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से सुवाल किया कि आप ने (600 सफ़ह़ात की) किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" लिखी तो क्या इस के लिखने से आप के हाथों में दर्द नहीं हुवा ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस के जवाब में जो कुछ इर्शाद फ़रमाया उस का ख़ुलासा येह है कि आ़म त़ौर पर किताब एक घन्टे या एक दिन में नहीं लिखी जाती और न ही मुसल्सल लिखते रहने की तरकीब होती है, अब तो कम्पोज़िंग का दौर है, मुझे किताब की कम्पोज़िंग नहीं आती, दा'वते इस्लामी की "मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की जानिब से काफ़ी मवाद कम्पोज़ शुदा भी मिल जाता है, कुछ मश्वरे दे कर मंगवाना भी पड़ता है, कुछ किताबों से निकाल कर कम्पोज़ करवाना भी पड़ता है, जगह ब जगह क़लम भी चलाना पड़ता है, काम के दौरान बीच में Gaps (वक़्फ़े) भी आते रहते हैं इस लिये हाथों में दर्द रहना ज़रूरी नहीं ताहम अब की बार मेरे साथ ऐसा मुआ़मला हुवा कि बसा अवक़ात क़लम पकड़ने से मेरे हाथ की उंगलियां अकड़ जाती थीं, तो मैं ने ह़कीम साह़िब का बताया हुवा इ़लाज किया, जिस से اَلْحَمْدُ لِلّٰه

मेरी उंग्लियां ठीक हो गईं, अब भी कुछ न कुछ लिखने का काम तो कर रहा हूं मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कई रोज़ से मेरी उंग्लियां अकड़ी नहीं, मगर ज़ाहिर है कि काम करते करते कभी आदमी को तक्लीफ़ हो भी सकती है। नीज़ लिखना एक दिमाग़ी काम भी है, लिखते हुए कभी दिमाग़ भी थकन का शिकार हो जाता है.

ऐ आशिक़ाने रसूल ! जो मुझ से महब्बत करते हैं, आप ग़ौर फ़रमाइये कि किताबें कितनी मेहनत से लिखी जाती हैं, मगर आप में से कई वोह होंगे कि जो मक्तबतुल मदीना की कुतुबो रसाइल को पढ़ना तो दूर की बात उन्हें खोल कर भी नहीं देखते होंगे ! आप लोगों को मुझ पर इन मा'नों में रहम करना और मेरी हमदर्दी करनी चाहिये कि मैं **अल्लाह** की रिज़ा पाने के लिये आप लोगों ही के लिये लिखता हूं कि मेरे मदनी बेटे और मदनी बेटियां इन किताबों को पढ़ें और अपनी आख़िरत की बेहतरी का सामान करें। **अल्लाह** पाक हमें अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मक्तबतुल मदीना से Print होने वाले कुतुबो रसाइल पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم (मदनी मुज़ाकरा, 23 जुमादल ऊला 1441 हि.) (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, शव्वालुल मुकर्रम 1441 हि.)

किताब लिखने की एह़तियातें

तस्नीफ़ो तालीफ़ के ज़रीए दीन का पैग़ाम लोगों तक पहुंचाना येह एक पुराना त़रीक़ा है, येह जिस क़दर अहम है इसी क़दर मुश्किल भी है। तह़रीरी काम में कई त़रह़ की एह़तियातों की अशद ज़रूरत है इस ह़वाले से चन्द बातें अ़र्ज़ करता हूं :

❀ दीनी किताब, रिसाला या मज़्मून लिखने में हमेशा **अल्लाह** पाक की

रिज़ा को पेशे नज़र रखना चाहिये, नामो नुमूद और शोहरत की तमन्ना न रखी जाए। हुब्बे जाह से बचते हुए किताब पर अपना नाम लिखना अगर्चे जाइज़ है लेकिन अस्ल मक़्सूद **अल्लाह** पाक की रिज़ा का हुसूल होना चाहिये। लिखते हुए येह ख़ौफ़ होना चाहिये कि मैं ने जो कुछ लिखा है कहीं उस के सबब आख़िरत में फंस न जाऊं। तह़रीर के मुआ़मले में इख़्लास का मुआ़मला भी निहायत नाज़ुक है, नफ़्सो शैत़ान इन्सान को मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से रियाकारी और अपनी वाह वा के शौक़ में मुब्तला करने की कोशिश में लगे रहते हैं। ❀ याद रखिये ! आयात और अह़ादीसे मुबारका की अपनी मरज़ी से तफ़्सीर व शर्ह़ करना ह़राम है, सिर्फ़ मुफ़स्सिरीन व शारिह़ीन की राय नक़्ल की जाए। यूंही शर्ई मसाइल लिखने में भी निहायत एह़तियात़ की ज़रूरत है कहीं कोई गुनाहे जारिया की सूरत न बन जाए। ❀ बा'ज़ मुसन्निफ़ीन की तह़रीरों में शर्ई अग़लात़ पाई जाती हैं, कमो बेश 20 साल पहले इन्ही बातों को देखते हुए ग़ालिबन 2000 सि.ई. में हम ने मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल बनाई थी ताकि मुसन्निफ़ीन अपनी कुतुब की शर्ई तफ़्तीश करवा सकें। ❀ अपनी तह़रीर में ग़ैर मोह़तात़ अल्फ़ाज़ का इन्तिख़ाब, दिली जज़्बात की ताईद न होने के बा वुजूद आ़जिज़ी पर मुश्तमिल फ़िक़्रात लिखना और झूटी मुबालग़ा आराई से काम लेना आख़िरत में गिरिफ़्त का सबब बन सकता है। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم अल्फ़ाज़ के इस्ति'माल में बहुत मोह़तात़ होते थे, एह़याउल उ़लूम की तीसरी जिल्द में है : ह़ज़रते मैमून बिन अबू शबीब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं बैठा ख़त़ लिख रहा था कि एक ह़र्फ़ पर आ कर रुक गया कि अगर येह लफ़्ज़ लिख देता हूं तो ख़त़

ख़ूब सूरत हो जाएगा लेकिन झूट से दामन नहीं बचा सकूंगा। फिर मैं ने वोह लफ़्ज़ छोड़ने का अ़ज़्म कर लिया कि भले मेरा ख़त ख़ूब सूरत न हो मगर मैं येह लफ़्ज़ नहीं लिखूंगा। (احیاء العلوم، 3/169) येह तो हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की तह़रीर में एह़तियातें थीं लेकिन आज कल के बा'ज़ मज़ामीन और आर्टीकल्ज़ में सच और झूट की परवा नहीं की जाती, ऐसा लिखने से बेहतर है इन्सान क़लम रख दे। ❀ ना'त शरीफ़, मन्क़बत और नज़्म वग़ैरा लिखने में मज़ीद एह़तियात की ह़ाजत है क्यूं कि इस में कलाम का वज़्न बराबर रखने, रदीफ़ व क़ाफ़िया निभाने के लिये कई दफ़्आ ग़ैर शर्ई या ग़ैर मोह़तात अश्आ़र भी मुरत्तब हो जाते हैं, लिहाज़ा सलामती व आ़फ़ियत इसी में है कि जो मज़बूत आ़लिमे दीन, फ़न्ने शाइ़री में माहिर और ज़ख़ीरए अल्फ़ाज़ का ह़ामिल न हो वोह ह़म्दो ना'त वग़ैरा मन्ज़ूम कलाम मुरत्तब करने की कोशिश न करे। इस मैदान में बड़े बड़े शुअ़रा जिन में ना'त गो शाइ़र भी शामिल हैं उन्हों ने ठोकरें खाई हैं और ऐसी ऐसी शर्ई ग़लतियां छोड़ कर दुन्या से रुख़्सत हुए हैं कि اَلْاَمَان وَالْحَفِيْظ। लिखने वालों ने उन की मिसालें तक लिखी हैं कि फ़ुलां इतना बड़ा शाइ़र था, इतने इतने कलाम लिखे, ना'तें भी कहीं मगर येह येह ग़लत बात लिख गया। ❀ اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मेरी तमाम तह़रीरों की शर्ई तफ़्तीश होती है यहां तक कि मैं एक पेम्फ़लेट भी लिखता हूं तो उस की शर्ई तफ़्तीश करवाता हूं, अश्आ़र लिखूं तो उन की शर्ई और फ़न्नी दोनों क़िस्म की तफ़्तीश करवाता हूं। **अल्लाह** करीम हमें तह़रीर में हुब्बे जाह व रियाकारी और शर्ई व अख़्लाक़ी ग़लतियों की आफ़तों से बचाए और सिर्फ़ वोही बात लिखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए जो उस को राज़ी करने का सबब

बने।[1] اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, जूलाई 2021 ई)

दा'वते इस्लामी का क्या होगा !

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मदनी मुज़ाकरे (15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1440 हि. ब मुत़ाबिक़ 20 एप्रिल 2019 ई.) में सुवाल हुवा कि कुछ लोग कहते हैं : "जब तक आप (या'नी अमीरे अहले सुन्नत) मौजूद हैं तब तक दा'वते इस्लामी चलती रहेगी, इस के बा'द निगरान साह़िबान और अराकीने शूरा वग़ैरा सब बिखर जाएंगे और फिर न जाने क्या होगा ! इस की क्या ह़क़ीक़त है ?" आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जवाब में फ़रमाया : बा'ज़ लोग येह समझते हैं कि मेरे मरने के बा'द दा'वते इस्लामी ख़त्म हो जाएगी, اِنْ شَآءَاللہ ऐसा नहीं होगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मैं ने अपनी औलाद और तमाम दा'वते इस्लामी वालों को मर्कज़ी मजलिसे शूरा की इत़ाअ़त करने की ताकीद की है और बारहा मदनी मुज़ाकरों में और बड़ी रातों के इज्तिमाआ़त में येह ए'लानात भी किये हैं कि हम ने दा'वते इस्लामी में मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मा तह़्त रह कर ही मदनी काम करना है, मर्कज़ी मजलिसे शूरा की मुख़ालफ़त नहीं करनी। दा'वते इस्लामी कोई दुकान या तर्का (या'नी विरासत) नहीं है जो मेरे मरने के बा'द मेरी औलाद में तक़्सीम होगा बल्कि दा'वते इस्लामी में जो काम करेगा उस को सलाम है। **अल्लाह** के फ़ज़्लो करम से मर्कज़ी मजलिसे शूरा काम कर रही है और येह करती रहेगी। मरना सब को है अगर किसी

1... येह मज़्मून 6 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. की शब मुत़ाबिक़ 18 एप्रील 2021 ई. को नमाज़े तरावीह़ के बा'द होने वाले मदनी मुज़ाकरे की मदद से तय्यार कर के अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को दिखा कर ज़रूरतन तरमीम कर के पेश किया जा रहा है।

के इन्तिक़ाल से दीन का काम रुक जाता तो काएनात की सब से बड़ी हस्ती कि जिन की बदौलत हमें इस्लाम मिला या'नी हमारे मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाने के बा वुजूद दीन का काम नहीं रुका तो इल्यास क़ादिरी किस हिसाब में है ! इस के मरने से क्या होता है ! जो मेरे लिये दीन का काम करता है आज से ही उस को ख़ुदा हाफ़िज़ ! और जो **अल्लाह** के लिये दीन का काम करता है वोह आज भी करे और मेरे मरने के बा'द भी करे, येह न सोचे कि इल्यास क़ादिरी चला जाएगा तो यूं हो जाएगा या इल्यास क़ादिरी के बा'द क्या होगा ? येह सब शैतानी वस्वसे हैं इन से हम सब को बचना चाहिये । जीते जी भी तो कुछ हो सकता है, ऐसी कई तहरीकें होती हैं कि जिन के क़ाइदीन ज़िन्दा और सिह्हत मन्द होते हैं मगर उन की तहरीकें ख़त्म हो जाती हैं । बहर हाल येह मेरी वसिय्यत है कि मेरे मरने के बा'द भी आप ने दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा को ही फ़ौक़िय्यत देनी है, येह जिस तरह चाहे उसी तरह दा'वते इस्लामी के ज़रीए दीन की ख़िदमत करनी है, मर्कज़ी मजलिसे शूरा से कभी भी ग़द्दारी नहीं करनी और जो मर्कज़ी मजलिसे शूरा की मुख़ालफ़त करे उस का साथ भी नहीं देना है । **अल्लाह** पाक ख़ाइनीन की नज़रे बद से मेरी दा'वते इस्लामी को, मेरे दा'वते इस्लामी वालों को और मेरी लाडली मर्कज़ी मजलिसे शूरा को महफ़ूज़ रखे और इन सब को इख़्लास के साथ दीन की ख़ूब ख़िदमत करने की सआदत बख़्शे । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, शव्वालुल मुकर्रम 1440 हि.)

मेरी दाढ़ी कैसे निकली (हिकायत)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : बरसों पुराना वाक़िआ़ है, एक 17 सालह इस्लामी भाई की घनी दाढ़ी देख कर मैं ने तअ़ज्जुब का इज़्हार किया, इस पर उन्हों ने इन्किशाफ़ किया कि मैं चेहरे पर दुम्बी का दूध लगाया करता था। मैं ने मार्च 2017 ई. में उस इस्लामी भाई से राबित़ा कर के तस्दीक़ चाही तो उन्हों ने बताया कि आप 1993-94 ई. में जब हमारे शह्र आए थे, येह उस वक़्त का वाक़िआ़ है, अब मेरी उ़म्र 41 साल हो चुकी है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं 10 बरस की उ़म्र से मदनी माह़ोल में आ गया था और इ़मामा शरीफ़ भी सजा लिया था। मेरी दाढ़ी नहीं निकल रही थी, हमारे घर पर एक साह़िब दूध देने के लिये आते थे, हम उन को "चाचा ह़ाजी" कहा करते थे। उन्हों ने मुझे इ़मामे शरीफ़ में देख कर ख़ुशी का इज़्हार करते हुए कहा : तुम बकरी या दुम्बी का कच्चा दूध चेहरे पर लगा लिया करो। اِنْ شَآءَاللّٰه दाढ़ी निकल आएगी। तो मैं ने कहा : दूध भी आप ही ला कर दीजिये। चुनान्चे वोह जब जब बकरी या दुम्बी का दूध ले आते, मैं सोने से पहले दाढ़ी उगने की जगह पर लगा लेता और फ़ज्र के लिये उठता तो मुंह धो लिया करता। मैं ने कई दफ़्आ़ ऐसा किया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه दूध लगाते रहने से आख़िर कार मेरी दाढ़ी भी निकल आई और घनी भी हो गई।

(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, रजबुल मुरज्जब 1438 हि.)

अल्लाह पाक से आ़फ़ियत मांगिये

करोड़ों ह़म्बलियों के पेश्वा ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल

رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं क़ुरआने करीम याद करता रहता था, फिर जब इल्मे हदीस की तरफ़ माइल हुवा तो इस इल्म में मेरी मश्ग़ूलिय्यत बढ़ गई और मैं ने अपने आप से कहा कि क़ुरआने पाक कब याद करूंगा ? तो मैं ने अपने रब से दुआ की, कि **या अल्लाह !** हिफ़्ज़े क़ुरआने करीम की सआदत अ़ता कर के मुझ पर एहसान फ़रमा। मगर उस वक़्त "आफ़ियत" के अल्फ़ाज़ नहीं कहे थे, (दुआ तो क़बूल हुई मगर उस की क़बूलिय्यत की सूरत यूं बनी कि) जब मुझे क़ैद किया गया तो उस दौरान मैं ने क़ुरआने करीम याद कर लिया। लिहाज़ा **अल्लाह** पाक से जब तुम किसी हाजत का सुवाल करो तो साथ में आफ़ियत भी मांगा करो। (مناقب امام احمد، ص57)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! आफ़ियत का मतलब है सलामती। लिहाज़ा, मसलन **अल्लाह** पाक से नोकरी के लिये दुआ करनी है तो इस तरह दुआ मांगिये कि **या अल्लाह** पाक ! फ़ुलां नोकरी अगर मेरे हक़ में बेहतर हो तो मुझे आफ़ियत व सलामती के साथ वोह नोकरी मिले।

रब्बे करीम से सिर्फ़ आफ़ियत ही मांगने की अहम्मिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : (1) **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** के रसूल ! सब से अफ़्ज़ल दुआ कौन सी है ? इर्शाद फ़रमाया : अपने रब से आफ़ियत और दुन्या व आख़िरत की भलाई मांगो। दूसरे दिन हाज़िर हो कर फिर उस ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** के रसूल ! सब से अफ़्ज़ल दुआ कौन सी है ? नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसी की मिस्ल (या'नी पहले दिन जो जवाब अ़ता फ़रमाया था उसी तरह का) जवाब इर्शाद फ़रमाया। उस शख़्स ने तीसरे दिन हाज़िर हो कर फिर

वोही सुवाल किया, रसूले रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर उस की मिस्ल जवाब दे कर इर्शाद फ़रमाया : जब तुझे दुन्या व आख़िरत में आ़फ़ियत मिल जाए तो तू काम्याब हो गया। (ترمذی، 5/305، حدیث:3523) (2) **अल्लाह** पाक से आ़फ़ियत का सुवाल करना उसे ज़ियादा मह़बूब (या'नी प्यारा) है। (ترمذی، 5/306، حدیث:3526) (3) **अल्लाह** पाक से अ़फ़्वो आ़फ़ियत का सुवाल किया करो क्यूं कि यक़ीन (या'नी ईमान व दीन में समझ बूझ) के बा'द किसी को आ़फ़ियत से बेहतर कोई चीज़ नहीं दी गई। (ترمذی، 5/327، حدیث: 3569۔ مرقاۃ المفاتیح، 5/349) (4) बन्दा इस (दुआ़) : ''اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ الۡمُعَافَاةَ فِی الدُّنۡیَا وَالۡاٰخِرَةِ'' (या'नी ऐ **अल्लाह**! मैं तुझ से दुन्या व आख़िरत में आ़फ़ियत का सुवाल करता हूं) से अफ़्ज़ल कोई दुआ़ नहीं मांगता। (ابن ماجہ، 4/273، حدیث:3851)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुआ़फ़ात में जिस्मानी, रूह़ानी, नफ़्सानी, शैत़ानी तमाम आफ़तों से सलामती शामिल है। (नीज़) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि आ़फ़ियत उसी में है जिस में रब राज़ी है, लिहाज़ा हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ैबर में ज़ह़र खा लेना, फ़ारूक़े आ'ज़म का मुसल्लाए मुस्त़फ़ा पर ख़न्जर खा कर शहीद होना, उ़स्माने ग़नी का क़ुरआन पढ़ते हुए ज़ब्ह़ हो जाना, इमामे ह़ुसैन का बे आबो दाना मिस्ले परवाना, शम्ए़ मुस्त़फ़वी पर निसार हो जाना, आ़फ़ियत ही था। लिहाज़ा रब्बे करीम से वोह आ़फ़ियत मांगो जो उस के इ़ल्म में हमारे लिये आ़फ़ियत है न वोह जो हमारे इ़ल्म में हमारे लिये आ़फ़ियत हो। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/297, 4/74) **अल्लाह** पाक हमें दोनों जहां में आ़फ़ियत व सलामती अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, दिसम्बर 2021 ई.)